Situation de **HABIB TANVIR** dans le théâtre avant gardiste de l'Inde (cours du 22/5): lire en anglais *Three Modern Plays* (Tendulkar, Girish Karnad, Badal Sarkar), Penguin India, ou tout ce que vous trouverez de, ou sur, ces trois auteurs, le premier Marathe, le second Kannada, le troisième bengali. Vous pouvez lire en français le chapitre « théâtre » de *Ragmala* 

Le théâtre contemporain engagé est l'héritier des principes de l'IPTA (Indian People Theatre Association) fondé dès avant l'Indépendance par les progressistes. Habib Tanvir en a fait partie, en fait toujours d'une certaine façon partie, malgré sa position très originale (très influencé par Brecht, mais aussi par la culture des tribus de sa région, le Chattisgarh, avec qui il a fondé sa troupe, Naya Manch, et qui lui inspirent scenario, musique, danse)

Habib Tanvir est mort à Bhopal l'an dernier

lectures complémentaires : lire en anglais *Three Modern Plays* (Tendulkar, Girish Karnad, Badal Sarkar), Penguin India, ou tout ce que vous trouverez de, ou sur, ces trois auteurs, le premier marathe, le second kannadiga, le troisième bengali.

analyses et théorie : l'ouvrage de Srampickal (Hurst & Cie, New-York/ N-Delhi, 1994), *Voice to the voiceless, The Power of People's Theater in India*.

Badal Sirkar, The third theater, 1978, Ghosh Printers,

Utpal Dutt, Towards a revolutionary theater, 1982, Sarkar & Sons, Calcutta

Shivarama Karanth, The Theater and Myself, Shri Ram Center for Performing Arts, 1995

Narendra Mohan, Kahai Kabîr, suno bhâî sâdho, Parag Prakashan, 1988

Vidyâshankar (adaptateur de Premchand), Mandir aur masjid, Adarshila Prakashan, 1992

Rakesh (sans rapport avec Mohan Rakesh), Râmlîlâ, Radhakrishna, 1997

Lakshmi Kant Vaishnav (*NâTak nahîn* « pas un drame », Rajkamal 1983, qui se passe intégralement à un arrêt de bus)

Sudarshan Majithiya (*Chaurâhâ* « carrefour », Lipi Prakashan, 1986)

Sarveshvar Dayal Saksena (*Bakri* « la chèvre », Lipi Prakashan, 1992)

Sharad Joshi (*Ek thâ gaddhâ*, *urf alâdâd khân* « il était une fois un âne, alias Alâdâd Khân, Rajkamal, 1979)

Jitendra Mittal (*MantrîmaNDal*, Lipiprakashan 1990)

Sushil Kumar Singh (sinhâsan khâlî hai, Lipi prakashan, 1988)

Mani Madhukar (*Dulârî Bâî*, 1985, Lipi Prakashan, *Bolo boddhi vriksh*, 1991, Lipi Prakashan) Pour Habib Tanvir, cf. chapitre théâtre dans *Ragmala* (L'Asiathèque, 2004), et *Carandâs cor*, *Dekh rahe hain nain*, *Agrâ bâzâr*, etc.

Charandâs chor (Le voleur Charandas), sa pièce la plus célèbre, avec Agra Bazar (qui met en scène un poète ourdou à la fois populaire et snobé par les cercles lettrés à la fin du 18ème siècle, car il ne se conforme pas aux canons de la poésie ourdou classique, au moment où est fondé le Fort William College) Une histoire populaire du Rajasthan (racontée en présence de Kamal Kothari), celle du voleur qui a fait serment à son guru de ne jamais mentir. Montée avec sa troupe de Chattisgarhi (lokkalâkâr), à qui il a demandé d'improviser à partir du scenario qu'il leur raconte. Avec l'aide de feu Thakur Ram, très célèbre acteur du « nouveau théâtre » (et qui a joué le rôle du guru) dans les premières représentations (mai-juin 75). Préface. En y ajoutant le dharma satyanam, de l'être véridique, litt. dire le « nom de la vérité », (cf . Ghasîrâm, propagateur de ce dharma) en Chattisgarhi car c'est le dharma prépondérant dans la région. J'ai fait du voleur le porte parole de ce dharma, prépondérant dans la région. Ensuite on a monté la pièce dans diverses régions. Svargîya Thâkur Râm anpaRh hote hue bhî paRhe likhe the, samajhdâr bhî the aur ek mâyne men intellectual bhî (स्वर्गीय ठाकुर राम अनपढ होते हुए भी पढे लिखे थे, समझदार भी थे और एक मायने में इंटलैक्चुअल भी)

Au premier acte, le premier tableau (drishya) (sur 5), commence par un chœur sur l'importance de la vérité pour le salut (premier vers : satyanâm ! satyanâm ! satyanâm !) ; beRâ clôture, bateau (ici, bateau, sens mystique, cf. Andher Nagari scène du marché)

Dès la fin de ce chœur, entrée du havaldar et de Carandas.

हवलदारः भाग के कहाँ जाएगा रे? अब तू बच नहीं सकेगा बाबू । नदी में जाएगा तो नदी से निकाल लूँगा बेटा । अरे तू चोरी

करके दिन दहाड़े भागा जा रहा था। अब आया बेटा मेरे हाथ।

चरनदासः (स्वर में दीनता है) अरे रे... अरे क्या हो गया महाराज?

हवलदारः अबे मुझे पहचानता नहीं? मैं हूँ मिस्टर बाबूदास। हवलदार! पुरानी सर्विस वाला हूँ बेटा। भूसा भर दूँगा साले।

चरनदासः (नकली रोना) अरे बाप रे!

हवलदारः गट्टर नीचे रख। तेरी सिर के अलग फेंक दूँगा बेटा।

चरनदासः (रोने लगता है) ओ माँ ! मेरा सिर अलग ही पड़ा रहेगा जी। (रोना बन्द कर) और क्या करेगा मेरे बाप?

हवलदारः तेरे हाथ-पाँव के टुकड़े कर चारों तरफ़ तिड़ी-बिड़ी कर दूँगा बेटा।

चरनदासः (ज़ोर-ज़ोर से रोता है) ऐ माँ ओ ! (रोना रोककर) और क्या करेगा?

हवलदारः तेरी हड्डी-पसरी एक कर उसकी चटनी पीस के कुत्तों को खिला दूँगा।

चरनदासः (ज़ोर-ज़ोर से रोता है। फिर एकदम रोना रोककर) हे माँ ओ! आज ही खिलाएगा मेरे बाप?

हवलदारः मेरी चलती तो अभी खिला देता बच्चू, पर क्या करूँ? सरकारी नौकर हूँ। ये इतना बड़ा गट्टर तेरे बाप का है बे ?

चरनदासः (दीन स्वर में) गाहक का है महाराज!

हवलदारः गाहक का है ?... तू धोबी है क्या रे ?

चरनदासः हाँ महाराज!

हवलदारः उल्लू कहीं का । तू ने पहले क्यों नहीं बताया ?

चरनदासः मुझे बताने का मौक़ा कब मिला महाराज?

हवलदारः अच्छा, एक बात बता, बेटा। तूने चोरी की है तो मुझे बता दे। अभी हम लोग दो ही आदमी हैं। मैं तुझे छोड़ दूँगा।

चरनदासः मैं चोरी नहीं करता महाराज।

हवलदारः चोरी कभी नहीं करना चाहिए । अच्छा, यह बता, इस गाँव से एक सोने की थाली चोरी हुई है बाबू । तू जानता है रे किसने चुराई होगी थाली .

चरनदासः हाँ ।

हवलदारः बता बेटा । अभी तुझे इनाम दूँगा ।

चरनदासः इनाम ! हवलदारः हाँ ।

चरनदासः दे इनाम दे।

हवलदारः पहले पता तो बता चोर का। चरनदासः पहले इनाम तो दो महाराज।

हवलदारः तुझे विश्वास नहीं है रे उल्लू। अच्छा ले, ये दो रुपये ले। बाद में और इनाम दुँगा।

चरनदासः अच्छा-अच्छा । हवलदारः तो बता जल्दी।

चरनदासः महाराज, जिस आदमी ने चोरी की है न, वह चोर है।

हवलदारः चोर है! यह बात मैं जानता हूँ।

चरनदासः बस तो फिर जाके उसे पकड़ लीजिए ।

हवलदारः अरे तू बताएगा तभीतो पकडूँगा ।

चरनदासः बता तो रहा हूँ महाराज!

हवलदारः उल्लू ! अरे मैं उसका नाम पूछ रहा हूँ चोर का । उसका नाम क्या है मुझे बता ?

चरनदासः ओह हो महाराज ! जो चोरी करता है उसका नाम चोर ही होता है, उसका कोई और दूसरा नाम नहीं होता ।

हवलदारः हाँ, जो चोर करता है वह चोर होता है और उसका नाम भी चोर होता है ।

[मौक़ा पाकर चरनदास भाग जाता है। हवलदार उसके पीछे-पीछे भागता है]

हवलदारः अरे, मुझे धोखा देकर भागता है। भाग के कहाँ जाएगा बच्चू ?...

[हवलदार चरनदास को न देख पाने के कारण ग़लत दिशा में चला जाता है। चरनदास दूसरी दिशा से भागकर मंच पर अ जाता है और कपड़ों की गठरी खोलकर उसमें से सोने की थाली निलालकर और ख़ुश होता है]

चरनदासः देखा, सोने की थाली बचा ली । हवलदार थाली को देख नहीं पाया ।

[थाली हाथ में लेकर गाता है] ...

[एक किसान, जिसके हाथ में सत्तू की गठरी है, आता है]

चरनदासः ओ जाने वाले ! तेरे हाथ में क्या है ? उसको यहाँ रख दे । नहीं तो तुझे कच्चा ही खा जाऊँगा ।

सत्त्वाला किसानः ओ हो ! मुझे कच्चा खा जाएगा, मैं तुझे कच्चा नहीं खा लूँगा । बड़ा आया कच्चा खाने वाला । हिजड़ा कहीं का !

चरनदासः ये इधर आ (हिजड़ा आवाज़ में) एक बात पूछूँ भैया ?

सत्त्रवालाः पूछ ।

चरनदासः तूने ये बात कैसे जानी ?

सत्त्रवालाः (हंसता है)

चरनदासः चुप बे, क्या मैं वही हूँ रे ? सत्त्वालाः मुझे नहीं मालूम भैया।

चरनदासः क्या रखा है रे ? नीचे रख दे । ला दे ... दे । अबे दे । भाग यहाँ से... (डराता है)

[सत्त्वाला डर कर भाग जाता है]

चरनदासः (गठरी खालकर देखता है) अरे सत्त्वाले ! ओ सत्त्वाले ! इधर आ । अपना सत्त् तू भी खा ले । आ जा । डर मत । आ जा, अरे दोनों भाई एकसाथ बैठकर खाएँगे । कितना आनन्द आएगा । आ जा । बैठ जा, अरे बैठ । (सत्त्वाला बैठता है। उसके कमर से पैसे की आवाज़ आती है उसे सुनकर) अंटी में क्या दबा रखा है ? ला दे । दे दे और दे । (सत्त्वाला डरते हुए पैसे की थैली दे देता है) अरे, तू तो मेरे से भी बड़ा चोर निकला । भाग यहाँ से।

[सत्त्र्वाला भाग जाता है। चरनदास गाता है]

[एक सेठानी सोने कए गहनों से लदी हुई प्रवेश करती है । उसके पीछे चरनदास भी लुकता-छिपता आता है]

चरनदासः (स्वतः) अरे बाप रे ! कितने गहने पहन रखे हैं ।

[कुछ सोचता है और फिर सहसा रोने लगता है]

सेठानीः (उसके पास आकर) क्या हुआ भैया ? कहाँ से आया है ? भटगाँव से आया है?

चरनदासः नाँदगाँव से आया हूँ ? (स्वतः) हत् तेरे की बुद्धू ! (स्पष्ट) कहाँ की हो बाई ? मैं भटगाँव से आया हँ।

सेठानीः मेरे छोटे बाबू ठीक है न ? चरनदासः दीदी-दीदी कह रहे थे।

सेठानीः दीदी-दीदी कह रहे थे ! उसकी तो कोई दीदी नहीं है । मैं तो उसकी भाभी हाँ।

चरनदासः अरे हाँ ! भाभी-भाभी कह रहे थे । सख़्त बीमार है । तेरे हाथ से दवाई पिऊँगो, नहीं तो पट से मर जाऊँगा, कह रहे थे । जल्दी चल ।

सेठानीः अच्छा भैया, मैं घर से आती हूँ।

चरनदासः नहीं, घर जाने का समय नहीं है। जल्दी चलो, नहीं तो वह पट से मर जाएगा।

सेठानीः अच्छा भैया चल।

चरनदासः (कुछ दूर जाकर) अरे बोप रे !

सेठानीः क्या हुआ भैया ?

चरनदासः बाई, रास्ता बहुत खतरनाक है । यहीं पर एक आदमी को कच्च से मार डाला था । बेचारा तड़प-तड़प कर मर गया । और तू औरत जात ! कोई आ जाए तो क्या करेगी ? इसलिए जितने गहने पहनी उसे इस गमछे में रख दो ।

[चरनदास अपना गमछा ज़मीन पर फैला देता है]

सेठानीः अच्छा भैया, रख देती हूँ।

[गहएना उतारती है और गमछे में रखती है। चरनदास इस दौरान उससे एक-एक बात पूछता है]

चरनदासः यह गहना कहाँ बनवाया है बाई ?

सेठानीः रायगढ़ में।

चरनदासः सोनार का क्या नाम है बाई?

सेठानीः राम लाल।

चरनदासः असली सोने का है ?

सेठानीः हाँ भैया।

[सेठानी पूरे गहने निकाल कर गमछे में बाँधती है]

चरनदासः ला मुझे दे।

सेठानीः नहीं, मैं रख लेती हूँ।

चरनदासः बाई, तेरे हाथ से गहना इधर-उधर हा जाएगा । यह सम्भाल कर रखूँगा ।

सेठानीः नहीं, मैं सम्भाल लूँगी।

चरनदासः बाई, तू औरत जात है। कोई चोर-बदमाश आया तो क्या करेगी ?मैं हिम्मत करूँगा। ला दे।

सेठानीः नहीं।

[चरनदास उसके हाथ सए पोटली छीन लेता है। सेठानी रोती है]

सेठानीः देवर बुला रहा है, कहकर बीच रास्ते में लाकर मेरे गहने छीन लिए । चोर कहीं का ।

चरनदासः क्यों रो रही है बाई ? क्या करूँ, भगवान ने मुझे चोर ही बनाया है।

सेठानीः मुझे आधे रास्ते में लाके धोखा दिया । तेरी खाट निकले ।

चरनदासः अरे खाट मत निकाल बाई। आराम करना पड़ता है।

सेठानीः तेरा मुर्दा निकले।

चरनदासः ऐसा मत कहो बाई। तुम्हारी हमारी मुलाकात नहीं होगी।

सेठानीः (फिर रोती है)

चरनदासः (रोते हुए) औरत जात का रोना सुनकर मेरा कलेजा फट जाता है । औरत जात का गहना चोरी नहीं करनी चाहिए । मैं चोरी नहीं करूँगा । (गहना सेठानी को देता है) ले, ये गहना सम्भाल के रख ले बाई ।

La séthani récupère ses bijoux et s'enfuit. Arrivée du Havaldar, à qui échappe encore une fois de justesse Charandas.

Au second tableau, on est chez un gourou, qui reçoit ses disciples. Trois nouveaux disciples sont là, un ivrogne (sharâbî), un joueur (juârî) et un fumeur (ganjérî), à qui le gourou demande de renoncer à leur vice et de payer la dakshina, avant de leur souffler le mantra dans l'oreille. Charandas est le quatrième, il expliquera qu'il ne peut pas renoncer au vol, son seul gagne pain, mais il propose de renoncer à quatre choses. Le gourou lui demande de son côté de s'engager à dire la vérité, et Charandas accepte, bien que cela le prive de sa stratégie essentielle.

[गुरूजी मृगछाला बिछाकर बैठ जाते हैं। अपना चिमटा और थैला भी नीचे रख देते हैं। भक्त लोग भी उनके तीनों ओर घेरा बनाकर बैठ जाते हैं और गुरूजी के साथ भजन सुरू करते हैं --]

जुआरीः (ताश कए पत्ते फेंकते हुए) महाराज, बड़ी देर से इन्तज़ार कर रहा हूँ। किना माल जमा कर लिया है आपने। आइए, हो जाएँ दो दो हाथ । लीजिए काटिए ।

गुरूः ऐसा चिमता दूँगा कि तेरी खोपड़ी खुल जाएगी। बदतमीज़ कहीं का। यह सन्त अखाड़ा है कि जुअ अखाड़ा रे ?

जुआरीः गुरुदेव ! आप तो सबके गुरु हो । जुआ में जीतने का कोई उपाय बताओ न । बहुत पैसा हार गया हूँ महाराज । गुरुः जुआ जीतने का उपाय तुझे सीखना है तो जुए वाले चौधरी के पास जा। यह सन्त अखाड़ा है बाबू। यह देख, यह बेचारा शरीफ़ शराबी तीन दिन सए मेरे पास आता है। पहले दिन आया शराब के नशे में धृत्त । बोलने का होश नहीं

। चलने का होश नहीं । उसने कहा, "गुरुजी शष्य बना लो" । मैंने कहा, चल हट ऐसे आदमी को शष्य बनाने वाला नहीं । बस उसी दिन उसने वचन दिया और शराब एकदम छोड़ दी । अगर मेरे शष्य बनना है तो जैसे इस शराबी ने शराब एकदम छोड़ दी वैसे ही तु भी ताश का जुआ छोड़ दे ।

जुआरीः गुरुदेव, मैं और कोई जुआ नहीं खेलता। सिर्फ़ यह एक ताश का जुआ हीतो खेलता हूँ महाराज!

गुरुः अरे सब जुआ छोड़ दे।

जुआरीः बस इसी ताश के खेल से आमलेट और स्लाइस का खर्चा निकालता हूँ।

गुरुः अब डबल मत लेना रे आमलेट का नाम । अगर तुझे आमलेट खाना है तो कैंटीन वाले का जाकर गुरु बना । अगर

मेरे शष्य बनना है तो जुआ छोड़ना पड़ेगा।

जुआरीः यह लीजिए, छोड़ दिया महाराज। अब मुझे चेला बना लोगे गुरुदेव ? गुरुः अरे इन्सान कोचे को बनाता हूँ। कुत्ते-बिल्लियों को चेला नहीं बनाता। जुआरीः ठीक है महाराज, आज से जुआ नहीं खेलूँगा। मुझे चेला बना लो गुरुदेव।

गुरुः ज़रूर बनाऊँगा।

गंजेड़ी: (आते हुए) गुरुदेव, मुझे चेला बना लो गुरुदेव।

गुरुः तेरे में क्या एब है बाबू ?

गंजेडी: मेरे में कुछ ऐब नहीं है गुरुदेव। (बीडी सुलगाते हए)

गुरुः कोई ऐब नहीं है, तो तू बना-बनाया चेला है बेटा। फिर तुझे किस बात की चिन्ता ? (खाँसता है) कहाँ का धुआँ है रे

(यकायक) मार डाला रे। चंडाल कहीं का । बदतमीज़...

गंजेरीः क्या हो गया गुरुदेव ?

गुरुः पूछना न पूछना, अरे कभी सन्त अखाड़े में बैठा है ? आके तुरन्त बीडी पीनी शुरू कर दी।

गंजेरीः कभी नहीं बैठा हूँ गुरुदेव।

गुरुः 💎 मैं सोच रहा हूँ कहाँ से इतना धुआँ आ रहा है । पावर हाऊस बना रखा है ।

गंजेरीः माफ़ कर दो गुरुदेव ।

बेटा, यह सन्त अखाड़ा है, अगर तुझे मेरा शष्य बनना है तो जैसे इस शराबीने शराब पीना बन्द कर दिया वैसे ही तू ग्रः

भी बीडी पीना बन्द कर दे।

गंजेरी: बीड़ी पीना बन्द कर दुँ गुरुदेव ? अच्छा लो, बन्द कर दिया।

शाबाश ! ...एक ही बात में बन्द कर दिया ! ... बेटा, एक चीज़ और... गुरुः

गंजेरी: और क्या चीज ? गरुदक्षीना लगेगी। गरुः

गुरुदक्षीना ! अभी देता हुँ गुरुदेव । गंजेरीः यह गमछा लो महाराज मेरी तरफ़ से। जुआरीः

शाबाश बेटा, जीते रहे पहलवान ! अरे ! इसमें तो कुछ नहीं है। गुरुः

उसमें क्या होगा महाराज! ज्आरीः

में समझा गमछे में कुछ दक्षीना बाँधकर दे रहा है। यहाँ तो एक पैसा नहीं है और गमछा भी छेद वाला है। गुरुः

आप नहीं जानते महाराज, वह छेद वाला है न इसी में से हवा पास होती है। जुआरीः

अच्छा तुमने मुझे मोटर सायिकल बनाया है। हवा भरने के लिए आया है। अरे बाबू ! गुरु दक्षीना नहीं देगा तो गुरुः

महाराज! सब पैसा आज मैं जुए में हार गया। कल ले लेना। जुआरौः

उधर चलाने के लिए आ गए।ये राशन की दुकान नहीं है बाबू, तुरन्त दान महाकल्याण। अभी दे। गुरु:

गंजेरी: यह लीजिए महाराज, मेरी तरफ़ से दक्षीना।

शाबाश बेटा ! ऐसे को कहते हैं चेला, तुझसे कब से माँग रहा हूँ, और इसे देख, तुरन्त रख दी । शाबाश ! कितना है गरु:

बेटा?

परा पचीस का बंडल है गरुजी! गंजेरी:

अरे यह क्या ? मैं समझा नोट का बंदल है और तूने रख दिया बीडी का बंडल ! अरे अभी बीडी पीना मैंने छु,ड़ाया है गुरु:

और तू मुझी को बीडी पिला रहा है। ... arrivée du Havaldar, à la recherche de son voleur, juste après

Carandas, il remarque qu'on a plutôt l'impression d'être dans un tripot que dans un lieu saint, mais le guru lui explique qu'aucun voleur ne peut être là, que tout voleur d'ailleurs se transformerait en saint homme comme l'eau de l'égout qui arrive dans la Ganga devient Ganga : जैसे गंगा का पानी। नाली का पानी गंगा में मिल जाता और गंगा बन जाता, वैसे ही संतके अखाड़े में चोर, लफ़ंगा, जुआरी, बदमाश, लाफ़र, शराबी-कबाबी जो भी आएगा बेटा, संत के अखाड़े में आएगा, संत बन जाएगा। वह चोर नहीं रह जाएगा। यहाँ कोई नहीं आया, दूसरी जगह देख (début de la complicité Guru-Carandas. Départ du havaldar, non

sans avoir empoché les pièces qui traînent par terre, insulté les nouveaux disciples et distribué quelques coups)

चरनदासः वाह गुरुदेव ! आज आपने मुझे बचा लिया महाराज ! भगवान बचाने वाला है बेटा । परमात्मा ने तुझे बचाया । मैंने क्या बचाया ? कहाँ रहता है ? तेरा नाम क्या है गुरुः

बाबू ?

चरनदासः महाराज, मेरा नाम है चरनदास।

क्या काम करता है? चरनदासः मत पूछो गुरुजी। क्या हो गया रे ? गरु:

चरनदासः मुझे बताने में शर्म आती है।

काम बताने में शर्म आती है। अच्छा मैं समझ गया बेटा। गुरु के सामने झूठ बोलता है। दाई के सामने पेट छुपाता गुरुः

है। तेरे पीछे हवलदार घूम रहा है। और तू आज बचाने के लिए मेरे पास आया है।

चरनदासः आप तो जान गए गुरुजी । मैं और क्या बताऊँ ?

बेटा, तु शष्य बनने के लिए आया है तो चोरी करना छोड़ दे। गुरुः

चरनदासः चोरी नहीं करूँगा तो खाऊँगा क्या ?

अरे संसार में सब क्या चोरी करके ही जीते-खाते हैं ? नौकरी कर । शराफ़त से रह । संसार में नाम कमा । चोरी गुरुः

करेगा तभी पेट पाल सकेगा ? अरे कुछ बोल । गुरु बनाने के लिए आया है न, गुरु का वचन कख । हज़ार बात का

प्रण मत कर । एक वचन का प्रण कर । बस एक चीज़ छोड़ दे ।

चरनदासः एक चीज़ ? आप हुक्म दे तो एक नहीं, चार छोड़ दूँगा गुरुदेव ।

अच्छा । चार चीज़ । कौन-कौन सी ?

चरनदासः पहिला प्रण करता हुँ गुरुजी ।

गुरुः अच्छा ले, मैं सुन रहा हूँ।

चरनदासः आज से मैं सोने की थाली में नहीं खाऊँगा।

गुरुः शाबाश !

चरनदासः दूसरा प्रण गुरुजी ।

गुरुः सुन रहा हूँ, सुन रहा हूँ, बोल-बोल ।

चरनदासः हाथी पर बैठके जुलूस के साथ शहर भर में कभी भी नहीं घूमूँगा गुरुजी।

गुरुः अच्छा-अच्छा । वाह रे संतोषी जीव ।

चरनदासः तीसरा प्रण गुरुजी ।

गुरुः ले बोल।

चरनदासः कोई रानी मुझे "शादी कर ले शादी कर ले" ऐसा कहेगी न, तो मैं साफ़ इन्कार कर दूँगा । मैं रानी से शादी करूँगा ही

नहीं गुरुजी।

गुरुः शाबाश बेटा! चरनदासः चौथा प्रण गुरुजी।

गुरुः यह सब-से बढ़-चढ़ के होगा। ले सुना।

चरनदासः अगर देश की प्रजा सब जमा होके मुझसे कहेगी – चरनदास ! राजा बन जा । गड्डी पर बैठ जा – ऐसा कहेगी न तब

भी मैं राजा नहीं बनूँगा गुरुजी । "मैं राजा नहीं बनता" साफ़ कह दूँगा ।

गुरुः (हँसता है) बेटा, तेरे चारों प्रण मैंने सुने। सोने की थाली में तू नहीं खाएगा। इसलिए कि बनपन से तू सोने की थाली से खा-खा के परेशान हो गया। आज गुरु के सामने तूने प्रण कर लिया कि तू सोने की थाली में नहीं खाएगा। वाह ! दूसरा प्रण – हाथी पर चढ़ के जुलूस में नहीं निकलेगा। इसलिए कि तू इतना बड़ा नेता है कि हाथी पर बैठ-

बैठ के जुलूस में निकल-निकल के अब तू बिल्कुल थक गया है और गुरु के सामने प्रण कर लिया है कि आज से कि हाथी पर चढ़ के जुलूस में नहीं निकलेगा। अच्छा। कौन-सी रानी तेरी खूबसूरती को देख के तरस रही है रे ? आज

से तू रानी संग शादी करेगा ही नहीं । वाह रे निर्लोभी ! चौथा प्रण – तू देश का राजा नहीं बनेगा । देश की सारी जानता तरस रही है न तेरे लिए ? चरनदास बैठ-बैठ गड्डी पर । उचित रूप से राज तुझी से चलेगा । लेकिन तू न गड्डी पर बैठेगा, न राजा बनेगा । तुझे लोभ नहीं है बेटा । तू संतोषी जीव है । वाह रे चरनदास ! चरनदास !

चरनदासः जी गुरुजी।

गुरुः मैंने सुन रखा था बेटा – कि आदमी जब सोता है और उसे नींद लग जाती है तब वह सप्ना देखता है। अरे बेटा, तू तो जागते हुए, बैठे-बैठे सपना देखता है रे। तू एक चोर है। तेरी ज़िन्दी में यह सब आने वाला नहीं है बाबू। ऐसी बातें तु जबरदस्ती क्यों सोचता रहता है?

चरनदासः नहीं गुरुजी! मौक़े की बात है। कहीं लग ही गया, तब की बात कहता हूँ।

गुरुः अरे, चोर आदमी जीवन भर मौक़ा ही ताकता रहता है बेटा । अच्छा बेटा, सुन। ये चार प्रण तूने अपने मन के किये हैं न, अब तू एक प्रण मेरे मन का कर।

चरनदासः वह कौन-सा प्रण गुरुजी ? गुरुः झुठ बोलना बन्द कर दे।

चरनदासः आपने अच्छा फँसाया गुरुजी। झूठ बोले बिना चोरी का काम नहीं चलता गुरुजी।

गुरुः हाँ, इसलिए कहता हूँ बेटा, सब बीमारी की एक दबाई – 'झूठ बोलना बन्द कर दे' । चोरी आप ही आप बन्द हो जाएगी ।

चरनदासः नहीं गुरुजी, मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगा गुरुजी ।

गुरुः 💎 तो हट, मुझे फुरसत नहीं । चल जा, दूसरी जगह देख ।

चरनदासः आपके पाँव पड़ता हूँ गुरुजी । गुरुः कह दिया, मुझे फुरसत नहीं ।

चरनदासः गुरुजी ! (एकाएक हवलदार को आता हुआ देखकर) अच्छा गुरुजी, आज से मैंने झूठ बोलना बन्द कर दिया (...)

गुरुः जय हो ! जीते रहो ! कल्यअण रहो ! अच्छा अब बता बेटा, गुरु के बारे में क्या बिचार है ?

चरनदासः सब अपने-अपने धन्धे में मस्त हैं गुरुजी।

गुरुः क्या मतलब ?

चरनदासः मतलब यह है गुरुजी कि मैं तो रात में छुप-छुपा के, नज़र बचा के, दीवार फाँद के चोरी करता हूँ, और आप हैं दिन-बहाड़े खुले मैदान में । आदमी सब जमा है और आमदनी आपकी ज़्यादा है । ainsi se détermine la vraie nature de Carandas, disant la vérité (cf. pièce de Bhartendu *Satya HarishChandra*) dans une société où les gens respectables tirent leur respectabilité de la dissimulation. Il ne renonce pas à sa profession.

Au troisième tableau, on retrouve le paysan pauvre au sac de sattû, qui, mendiant de quoi manger, croise par hasard le chemin de Charandas. quand il le reconnaît, il se livre à lui, étrangle-moi, je n'ai plus d'issue, tu m'as tout pris déjà et je ne peux plus nourrir ma famille. Charandas l'amène chez un riche fermier (un Malguzar) chez qui il réussit l'exploit de voler toutes les réserves à la barbe de ses comptables, distrayant son attention par une danse populaire avec le paysan pauvre, et il l'oblige à partager ses biens avec les pauvres.

le 4<sup>ème</sup> tableau est chanté (gît)

Au 5<sup>ème</sup> tableau, Carandas est dans un temple, et fait une offrande d'une telle générosité que le pujari n'en revient pas

L'Acte 1 finit par un chœur sur le salut et la femme

Dans l'acte 2, tout ce que Charandas avait promis d'éviter lui est présenté par le destin (jusqu'au mariage avec la reine et à la procession dans toute la ville sur l'éléphant, et la proposition de gouverner le pays. Il refuse et est mis à mort par la reine ulcérée). C'est au cours du hold up du trésor royal que sa réputation de voleur véridique (seul homme véridique du royaume) parvient à la reine : il réussit en se faisant passer pour le ministre nouvellement nommé, à usurper le privilège de vérifier les comptes et dérobe 5 pièces. Le gardien du trésor qui contrôle le trésor après l'arrivée du vrai ministre en vole 5 de plus, et c'est grâce à Carandas qu'est ainsi prouvée sa malhonnêteté, d'où la suite des événements jusqu'à la proposition de mariage.

Le premier tableau est la mise en scène du hold up, avec la complicité de Guruji (Carandas est venu le voir pour lui dire que c'est son dernier vol et son coup de maître), chargé de retarder le vrai ministre en visite dans la région avec les autres officiels de la cour, dont le gardien du trésor et son trésor, pendant que Carandas, déguisé en ministre, opère.

चरनदासः गुरुजी, तो मन्त्री को आप रोक लीजिए।

गुरुः क्यों ?

चरनदासः और रोकके उसी के साथ गपशप में लगे रहियेगा।

गुरुः कर्म फूट गए। (...) अरे राम राम! माया मिली न राम। दुविधा में गए प्राण। कहाँ तुझसे मुलाक़ात हो गई रे। चरनदास, एक काम कर बेटा। बहुत सारे फूल के गजरे ला के दे दे।

चरनदासः ओ हो, मुझे काम है न गुरुजी (...) ठहरिये, मैं हवलदार का भैजता हूँ । उसी के हाथ में फहूलों का गजरा दे के भेजता हूँ।

गुरुः अच्छा ले जा । जल्दी भेजना । (चरनदास जाता है) हाय बाप रे इसकी हिम्मत तो देखो ! कितनी बड़ी चोरी करने जा रहा है। और मुझे भी मिला रहा है अपने कर्म में ।

[मन्त्री साहब आते हैं]

गुरुः हुज़ूर, सरकार, कल्याण हो । चिरंजीव हो ।

मन्त्रीः हय दान माँगने की जगह नहीं है महाराज । घर में आइएगा तो दान मिलेगा ।

गुरुः मैं दोन नहीं माँग रहा हूँ सरकार। उदघाटन करने के लिए कह रहा हूँ।

मन्त्रीः उदघाटन ? काहे का उदघाटन ?

गुरुः बहुत-सी संस्थाएँ हैं। बहुत लोग आपका रास्ता देख रहे हैं। कब नए मन्त्री आएँ और कब हमारी संस्था का उदघाटन हो! फुल के गजरे भेजे हैं सब ने।

मन्त्रीः गजरे! कहाँ हैं?

गुरुः आप ज़रा जल्दी पहँच गए महाराज । वह लोग पीछे रह गए हैं । लेकिन बस अब आ ही रहे होंगे । आप ज़रा रुकिए मैं देखता हूँ । वह देखिए वह आ गए फूल के गजरे । लाऔ हवलदार लाऔ । फूल के गजरे ।

[हवलदार एक बाँस पर फूल की मालाएँ, एक कैंची, और एक रिबन यानी फ़ीता लाता है। गुरु कैंची मन्त्री को देते हैं। हवलदार हर उदघाटन से पहले मन्त्री के गले में फूलवाला मालता है ]

गुरुः यह लीजिए महाराज । साइकिल की दुकान । इसका उदघाटन कीजिए । (मन्त्री फ़ीता काटते हैं । हवलदार एक नई माला उनके गले में डालता है)। यह राशन की दुकान । (मन्त्री कैंची से फ़ीता काटते हैं । हवलदार नई माला उन्हें पहनाता है)। यह जूते की दुकान । (मन्त्री फ़ीता काटते हैं । हवलदार एक और माला उनके गले में डालता है)। यह कपड़े की दुकान (मन्त्री फ़ीता काटते हैं। हवलदार माला उनके गले में डाल देता है)। यह पान की दुकान (मन्त्री फ़ीता काटते हैं। हवलदार उनके गले में माला डाल देता है) यह जानता के लिए बाथरूम है। (मन्त्री फ़ीता काटते हैं। हवलदार एक नई माला उनके गले में डालता है) यह ... यह काहे की दुकान है, ये मुझे भी नहीं मालूम ... पर आप उदघाटन कर दीजिए।

sattû (farine grossière d'orge et pois chiche) vâlâ --hat, tere kî buddhû : injure à lui-même pour la sottise qu'il vient de faire en estropiant le nom du village dont il se prétend natif aussi